Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences ISSN: 2581-6241
Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 5.146
Volume - 5, Issue - 12, December - 2022 Publication Date: 31/12/2022

DOIs:10.2018/SS/202212003 --:-- Research Article

प्रदर्शन कला समेकित शिक्षा, वर्तमान की आवश्यकता

MANJU BAGHEL
(शोधकर्त्री) शिक्षा संकाय, दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट, (डीम्ड यूनिवर्सिटी) आगरा
Email - manjubaghel726@gmail.com

सारांश : प्राचीनकाल से लेकर आज तक हमारी संस्कृति को विभिन्न कलाओं के माध्यम से देखा जा सकता है। इन्हीं कलाओं ने हमारी सनातन संस्कृति के सत्यम, शिवम और सुंदरम जैसे जीवन के वास्तविक और सकारात्मक पक्षों को चित्रित व चरितार्थ किया है। कला के माध्यम से ही हमारा लोकजीवन, लोकमानस तथा जीवन का आंतरिक और आध्यात्मिक पक्ष अभिव्यक्त होता रहा है। हमें अपनी इस परंपरा से कटना नहीं अपितु परंपराओं से रस लेकर आधुनिकता को चित्रित करना है। इस तकनीकी विकास की द्रुत गामी आधुनिकता में विद्यार्थियों के सहजीवन और मानसिक शांति के लिए आवश्यक है कि शिक्षा में विभिन्न कक्षाओं के साथ प्रदर्शन कला को समेकित किया जाना चाहिए। शिक्षा में प्रदर्शन कला विद्यार्थियों के मस्तिष्क को व्यस्त रखने के साथ विद्यार्थियों को शारीरिक और भावनात्मक रूप से सामुदायिक गतिविधियों से जोड़ती है जो कि सही मायने में मानवता है। प्रदर्शन कला के माध्यम से वे स्वयं को समझकर प्रभावशाली ढंग से आत्मविश्वास के साथ अभिव्यक्त कर पाते है।

1. प्रदर्शन कला :

प्रदर्शन कला वे कलाऐं हैं, जिनमें कलाकार विभिन्न प्रकार की वस्तुओं व श्रव्य दृश्य सामग्री का प्रयोग कर स्वअभिव्यक्ति के साथ कला का प्रदर्शन करता है। प्रदर्शन कलाऐं मानव की बेहतरी, व्यक्तिगत भलाई की शारीरिक और भावनात्मक यात्रा है। प्रदर्शन कला में कलाकार अपनी कला का उपयोग कर विभिन्न प्रकार की शारीरिक भाव भंगिमाओं का प्रदर्शन व वस्तुऐं बनाते हैं जैसे कि चित्र, आलेखन आदि। प्रदर्शन कला के अंतर्गत कई प्रकार की कलाऐं शामिल है। सब कलाओं में समानता यह है कि इन्हें प्रत्यक्ष रूप से दर्शकों के समक्ष प्रस्तुत किया जा सकता है।

प्रदर्शन कला का एक महत्वपूर्ण अंग प्रदर्शन भी होता है, जो कि शिक्षक व शिक्षार्थी के जुड़ाव के लिए बहुत जरूरी होता है। अतः हम कह सकते हैं कि शिक्षक भी एक कलाकार होता है जो विभिन्न प्रकार की शारीरिक भाव भंगिमाओं का प्रदर्शन कर छात्रों के समक्ष अपनी अभिव्यक्ति करता है। एक प्रभावशाली शिक्षक की व्यक्तिगत भाव भंगिमा अत्यंत प्रभावी और उत्कृष्ट होती हैं इसलिए एक शिक्षक कलाकार भी होता है जो अपने छात्रों का निर्माण करता है। प्रदर्शन कला पर पूर्व में का काउआट शैफट (2013) में अध्ययन किया। यह गुणात्मक केस स्टडी थी जिसका उद्देश्य फॉर्मर हाई स्कूल थिएटर के छात्रों की मनोवैज्ञानिक आवश्यकता और प्रत्यक्षीकरण का प्रभाव जानना था। मैंरियल हार्डमम(2019) साइंस की पाठ योजनाओं को कला समेकित करके पढ़ाया। विद्यार्थियों की उपलब्धि और अधिगम कारकों पर कला समेकित अनुदेशनों का सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। अध्ययनों में पाया गया कि कला समेकित अनुदेशनों का शिक्षण पर सकारात्मक प्रभाव होता है। तथा जितना शिक्षक की भाव भंगिमाऐं प्रभावी होंगे उसका शिक्षण भी उतना ही प्रभावी होता है। प्रदर्शन कला के अंतर्गत एक शिक्षक द्वारा शिक्षण के समय निम्नलिखित प्रदर्शन कलाओं को सरलता से प्रयोग किया जा सकता है जैसे नाटक अभिव्यक्ति, रंगमंच, व्यंग, नृत्य, संगीत इतिहास, ओपेरा, कविता, सर्कस, माइम, खेल, कठपुतली तथा जादूगरी आदि। प्रदर्शन कला मानव के बेहतरीन जुड़ाव की व्यक्तिगत और भावात्मक यात्रा है। जिससे छात्रों में विभिन्न प्रकार के मानवीय, नैतिक गुणों का विकास होता है। प्रदर्शन कला विद्यार्थियों के संपूर्ण व्यक्तित्व, शारीरिक और भावनात्मक रूप से उत्कृष्टता का माध्यम है। प्रदर्शन कलाओं के माध्यम से वे स्वयं को अभिव्यक्त कर पाते हैं तथा दूसरों की भावनाओं को प्रभावी ढंग से समझ पाते हैं।

2. प्रदर्शन कला समेकित शिक्षा :

प्रदर्शन कलाऐं प्राय किसी भी कार्य को रुचिपूर्ण और आनंददाई बनाती हैं। विभिन्न प्रकार के क्रियाकलापों व प्रदर्शन के माध्यम से पढ़ाया जाता है तो छात्र उसमें अधिक जुड़ाव व आनंद का अनुभव करते हैं। शिक्षण करते समय एक शिक्षक अनेकों प्रकार की भाव भंगिमाओं की अभिव्यक्ति करता है। प्रभावपूर्ण भाव भंगिमाओं की अभिव्यक्ति शिक्षक को एक प्रभावी व्यक्तित्व के रूप में अभिव्यक्त करती हैं, जो शिक्षक अपनी शारीरिक और मानसिक भाव भंगिमाओं के साथ अच्छा समावेशन अभिव्यक्त करता है, उसका शिक्षण उतना ही अधिक प्रभावी होता है। साथ ही यदि वह विभिन्न प्रकार की प्रदर्शन कलाओं चित्र, संगीत आदि के

माध्यम से अभिव्यक्ति करता है तो वही शिक्षण अधिक सहज और रुचिपूर्ण हो जाता है। विद्यार्थी और शिक्षक के मध्य एक बेहतरीन जुड़ाव पैदा होता है जो कि शिक्षण प्रक्रिया के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण होता है।

3. प्रदर्शन कला समेकित शिक्षा की आवश्यकता व महत्व

प्रदर्शन कला समेकित शिक्षण विद्यार्थियों और शिक्षकों में आत्मविश्वास और आत्मसम्मान विकसित करने में सहायता करते हैं, जिससे वे विश्वास से परिपूर्ण होकर एक उत्कृष्ट व्यक्तित्व के रूप में स्वयं को अभिव्यक्त कर पाने में सक्षम होते हैं। जब कोई व्यक्ति विभिन्न प्रकार की आधुनिक चुनौतियों के साथ सामंजस्य स्थापित करने के लिए आधारभूत अभिव्यक्त कला कौशलों को सीख लेता है तो वह जीवन के प्रति अधिक विश्वसनीयता, सकारात्मकता को प्रदर्शित करता है। वह उत्तरदायित्व से परिपूर्ण निर्णय लेने में तथा विभिन्न प्रकार के जोखिम को वहन करने में सक्षम होता है। शिक्षा को परिपूर्ण बनाने के लिए शिक्षा में प्रदर्शन कलाओं को समन्वित करने पर वर्तमान नई शिक्षा नीति 2020, राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा, एनसीईआरटी अधिक बल दे रहे है।

प्रदर्शन कलाऐं विद्यार्थियों में अभिव्यक्ति व कला कौशलों के विकास में सहायक होती है । विद्यार्थियों को शैक्षिक पाठ्यचर्या में अधिक रचनात्मकता और सृजनात्मकता की आवश्यकता पड़ती है जिसे प्रदर्शन कला समेकित शिक्षण अधिगम से सरलता से सिखाया जा सकता है। शैक्षिक सिद्धांत भावात्मक पक्ष पर अधिक बल देते हैं जबकि प्रदर्शन कलाऐं सिद्धांत व भावात्मक दोनों पक्षों के मध्य समन्वय स्थापित करने का कार्य करती है। विद्यार्थियों की रचनात्मकता और सृजनात्मकता को निखारने का कार्य करती है। भारत विश्व की उन चुनिंदा महाशक्तियों में से एक है जो सामाजिक, आर्थिक विकास लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए वैश्विक मंच पर संपूर्ण विश्व को अचंभित और आकर्षित करने वाले मानवीय संसाधनों से परिपूर्ण हैं। तीव्र गति से बढ़ती तकनीकी और प्रौद्योगिकी निकट भविष्य में अतिक्रमणता का रूप धारण कर रही है, तब हमें आर्थिक सामाजिक व मानसिक क्रियाकलापों को व्यवस्थित करने में कठिनाइयां

उत्पन्न होने लगती हैं। क्योंकि तकनीकी अपने चरम पर है जिसके परिणामस्वरूप विद्यार्थी व शिक्षक दोनों ही शारीरिक व मानसिक रूप से प्रभावित हो रहे हैं। विद्यार्थी के समक्ष भटकाव की स्थिति उत्पन्न हो रही हैं तथा शिक्षकों में भी आत्मसंतुष्टि व अभिव्यक्ति की पूर्णता का अभाव उत्पन्न होता जा रहा है। उपरोक्त परिस्थितियों में प्रदर्शन कला समेकित शिक्षण विद्यार्थी व शिक्षक दोनों के लिए शारीरिक मानसिक व भावनात्मक रूप से सहायक होंगे। क्योंकि इस प्रकार की भावनात्मक व शारीरिक जुड़ाव की गतिविधियों को बढ़ावा देना अनुपयोगी तत्वों को नकारना है, जो मानसिक व शारीरिक दबाव उत्पन्न करते हैं।

प्रदर्शन कला समेकित शिक्षण, शिक्षा में रचनात्मक विकास में सार्थक भूमिका निभाते हैं तथा विद्यार्थियों की रचनात्मक अभिव्यक्ति में निखार उत्पन्न करते हैं। शैक्षिक सिद्धांत भावात्मक बुद्धि को अत्यधिक महत्वपूर्ण नहीं मानते हैं जबकि प्रदर्शन कला समेकित शिक्षा पूर्ण यात्रा है जो दोनों को समन्वित रूप में व्यवस्थित बनाती हैं। प्रदर्शन कला समेकित शिक्षण की भूमिकाओं को सामान्यता इस प्रकार समझ सकते हैं।

4. प्रदर्शन कला सामेकित शिक्षा की भूमिका व उपयोगिता

- विद्यार्थी व शिक्षक दोनों को कौशलात्मक व रचनात्मक रूप से सक्षम बनाने के लिए।
- शिक्षण अधिगम को सरल, रुचिपूर्ण और आनंददाई बनाने के लिए।
- शिक्षण अधिगम रचनात्मक अभिव्यक्ति व प्रभावी व्यक्तित्व विकास के लिए।
- आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देने के साथ- साथ संरचनात्मक व रचनात्मकता का विकास करने के लिए।
- शारीरिक, मानसिक व भावात्मक क्रियाकलापों में समन्वय स्थापित करने के लिए।
- चारित्रिक विकास व नैतिकता को बढ़ावा देने के लिए हस्त कौशल व स्वरोजगार को बढ़ावा देने के लिए ।
- सहयोग व समानता जैसी कौशलों को बढ़ावा देने के लिए।
- दैनिक जीवन की वास्तविकता के साथ अधिगम को जोड़ने के लिए मानवीय भलाई व विकास के लिए।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. काउआट शैफट (2013) फॉर्मल स्टूडेंट्स फॉर सेक्शन ऑफ आवर थिएटर इंपैक्टेड लाइफ स्किल्स एंड साइकोलॉजिकल न्यूज़ ।
2. मैरियल हार्डमम(2019) इफ़ेक्ट ऑफ़ आर्ट इंटीग्रेटेड इंस्ट्रक्शन ऑन मेमोरी फॉर साइंस कंटेंट ट्रेंड्स इन न्यूरोसाइंस एंड एजुकेशन
3. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005
4. एनसीईआरटी 2005, 2022।
5. कोबसे 2004
6. नई शिक्षा नीति 2020।
7. सीबीएसई 2020